ब्लॉग परिचय

एक महाविद्यालय किसी भी समाज की प्रगति का प्रतीक माना जाता है, लेकिन वे कौन-सी चीजें हैं जो किसी भी शैक्षिक संस्थान को इसके क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ बनाती हैं? ये न तो आधार-भूत सुविधाएँ हैं और न ही प्लेसमेंट रिकॉर्ड, जो आमतौर पर समझा जाता है। किसी भी उच्च शिक्षा के स्थान की विवेचना के लिए एक स्वस्थ एवं सक्रियात्मक वातावरण का होना और इससे जुड़े हुए लोगों के पास समान अवसर होना तथा प्रजातांत्रिक प्रबंधन पर प्रकाश डालना अत्यंत आवश्यक है। आज की चर्चाओं में महाविद्यालय एवं उनकी रैंकिंग छात्रों के संपूर्ण कल्याण के सूचकों पर ध्यान आकर्षित करने में असफल होती हैं। यह किसी भी लिहाज से मान्य नहीं है और इसलिए यह अनुमान लगाना कि SRCC, जो कि भारत के अग्रणी महाविद्यालयों में से एक है, इन चीजों से सुसज्जित है। SRCC के प्रदर्शन के विषय में किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए इस परिप्रेक्ष्य के अंतर्गत एक विश्लेषण की आवश्यकता है और इस संदर्भ में एक बहस होनी जरूरी है।

हम इस प्रकार की चर्चाओं पर अधिक बल नहीं देते हैं, तथ्य यह है कि उपरोक्त चीजों के न होने का किसी भी महाविद्यालय के नाम या सम्मान से संबंध नहीं है, जैसा कि हम SRCC के विषय में देख सकते हैं, वरन् इनका कारण छात्रों का मानसिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य तथा नियमित रूप से उनकी अन्य प्रतिभाओं का दमन है। इसके अतिरिक्त यदि SRCC के छात्र एक निराशा की भावना के साथ ग्रैजुएट होकर निकलते हैं और इसके साथ-साथ तथाकथित 'SRCC अनुभव' से वंचित रहकर ठगा-सा महसूस करते हैं, तब इस प्रकार का प्रकरण एक 'वैश्विक पसंद' के महाविद्यालय द्वारा किसी भी मायने में स्वीकार किया जाने वाला नहीं है। अहम बात यहाँ पर यह है कि विभिन्न प्रकार से वंचित होने की भावना दिन-प्रतिदिन विकराल रूप लेती जा रही है।

अतएव, किसी भी खामी के उजागर होने पर इन विषयों के इर्दगिर्द चर्चा होना जरूरी हो जाता है। क्या हम एक पोषणात्मक एवं उत्तेजनात्मक वातावरण प्रदान करने में असफल हो रहे हैं? क्या यह लालिमायुक्त संरचना विद्यार्थियों की प्रगति में सहायक बनने की बजाय बाधक साबित हो रही है। यह क्यों हो रहा है? क्या SRCC अब एक समावेशी संस्थान नहीं रह गया है? उठाए गए इन प्रश्नों को उल्लिखित एवं इनका विश्लेषण करके ही हम इनके हल ढूंढ सकते हैं। और, यह ब्लॉग यही करता है।

यह मंच SRCC के सामाजिक, शैक्षिक और गैर-शैक्षिक बनावट के विभिन्न संरचनात्मक पहलुओं पर चर्चा के लिए अवसर प्रदान करेगा। यह मंच ये भी समझने की कोशिश करेगा कि ये चीजें कहाँ से उभरकर आ रही हैं, इनके मायने क्या हैं, ये किससे प्रभावित होते हैं और इनके अल्प एवं दीर्घ-कालिक प्रभाव क्या हैं। जातिवाद, वर्ग-विशेष का प्रभुत्व, छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य, शैक्षिक मापदंडों और बाह्य क्रियाकलापों जैसे मुद्दों को हमारी चर्चाओं में प्राथमिकता दी जाएगी। हमें स्वीकार करना होगा कि हमारे महाविद्यालय की अधिकतर समस्याएँ बड़े सामाजिक मुद्दों को व्यक्त करती हैं और इनके घटित होने का कारण बड़े स्तर पर देश के शैक्षिक-प्रणाली की विफलता है। और, यह बिलकुल भी मुमकिन नहीं है कि हम अपने महाविद्यालयों की समस्याओं पर संपूर्ण परिदृश्य का संज्ञान लिए बिना कोई चर्चा कर पाएँ। और, यह हमारे पोस्ट में भी प्रमाणित होगा।

यह मंच केवल चुनिंदा लोगों की भावनाओं को व्यक्त करने के उद्देश्य से नहीं स्थापित किया गया है, वरन् हम सहृदय आशा करते हैं कि इस ब्लॉग के पाठक महाविद्यालय के प्रबंधन के बारे में अपने विचारों, भावनाओं एवं द्रिष्टिकोणों को भी साझा करेंगे। सभी प्रकार की राय और आलोचनाओं का स्वागत किया जाएगा, जिससे कि यह मंच लोगों को प्रतिनिधित्व एवं गतिशील माहौल प्रदान कर सके। यह मंच हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में उपलब्ध होगा और लेख इन दोनों में से किसी भी भाषा में प्रस्तुत किये जा सकते हैं। महाविद्यालय के वर्तमान छात्रों के साथ-साथ पूर्व छात्रों के योगदान भी हमारे लिए मूल्यवान साबित होंगे। इसके अतिरिक्त हम गैर-SRCC छात्रों के द्वारा भी लेखों को प्रोत्साहित करते हैं, इसका कारण यह है कि इनमें से कई मुद्दे समस्त दिल्ली विश्वविद्यालय की समस्याओं को दर्शाते हैं जिनके बारे में यहाँ पर चर्चा की जाएगी। सभी योगदान कर्ताओं की पहचान गोपनीय रखी जाएगी। हमें पूर्ण विश्वास है कि जो भी हम कर रहे हैं वह किसी भी प्रकार से गलत नहीं है और न ही उसपर किसी तरह का प्रश्नचिन्ह है, और यह तरीका केवल स्वतंत्र अभिव्यक्ति के प्रसार को सुनिश्चित करने के लिए अपनाया गया है।

यहाँ पर यह कहना भी आवश्यक हो जाता है कि इस ब्लॉग का उद्देश्य अभद्रता या दुष्प्रचार फैलाना नहीं है, वरन् इस ब्लॉग का मकसद है कि एक ऐसा वातावरण निर्मित किया जाए जो लोगों को साथ आकर SRCC को अधिक सहायक एवं कम दमनकारी बनाने में सहयोग करे। जैसा कि ऊपर व्यक्त किया गया है, हम सभी इस ब्लॉग के माध्यम से हमारे विशवविद्यालयों को बर्बाद करने वाली शिक्षा-प्रणाली की दयनीय स्थिति को उजागर करने का प्रयास करेंगे। और, इसके लिए किसी एक कारक को दोष देना सूक्ष्म-द्रिष्टि का प्रतीक एवं समस्याओं को असंवेदनशील ढंग से देखना होगा। अतएव, हम आशा करते हैं कि तुच्छ आरोप-प्रत्यारोपों के बजाय इस मंच का इस्तेमाल अनुचित एवं असंवैधानिक सोच पर आधारित कुप्रथाओं को जड़ से समाप्त करने पर बल देने के लिए किया जाएगा। अतः हम सभी से आह्वान करते हैं कि हम

सब साथ आकर हमारे महाविद्यालय में प्रवेश करने वाले उन सभी छात्रों को वह अनुभव प्रदान करने के लिए प्रयासरत हों जिसके वे हकदार हैं।